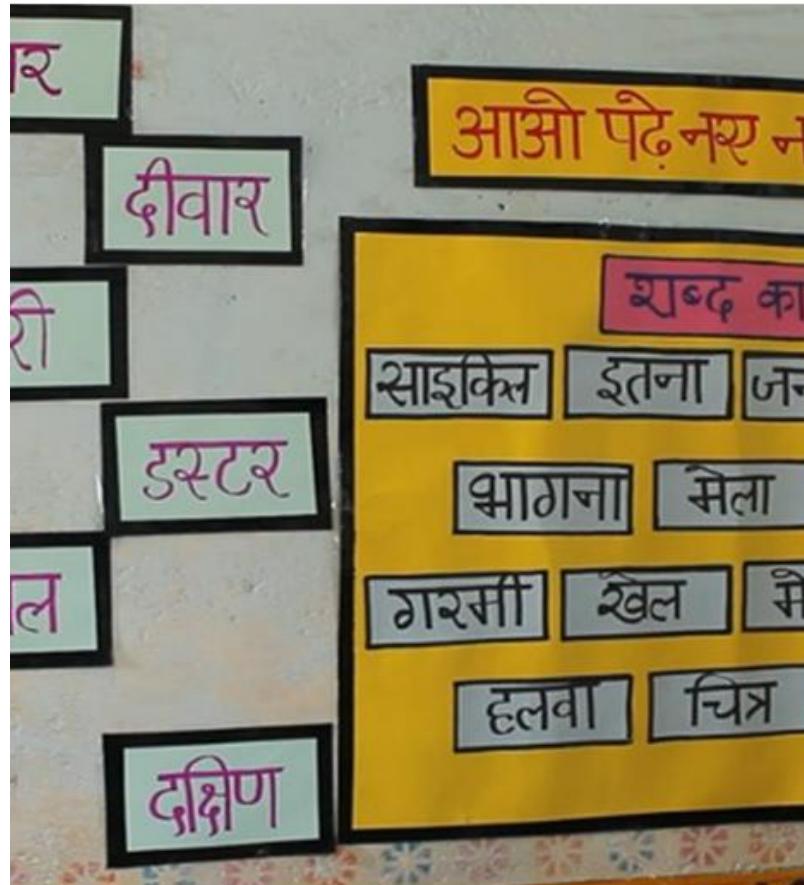


“प्रारंभिक कक्षाओं में प्रिंट समृद्ध वातावरण का इस्तेमाल कैसे किया जाए?”

एक प्रिंट समृद्ध वातावरण वह होता है जहाँ बच्चों को अलग-अलग तरह के प्रिंट से विभिन्न तरीकों से जुड़ने का अवसर प्रदान होता है। प्रिंट समृद्ध वातावरण में इस तरह के लेख की प्रदर्शनी होती है जिसे हर कोई देख सकता है, समझ सकता है और उसके बारे में बात कर सकता है।

हमारे लिए यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि कक्षा में प्रिंट का मुख्य इस्तेमाल कक्षा को सजाने के लिए नहीं बल्कि बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के लिए है।



इसके लिए ज़रूरी है कि हम अपनी कक्षा में विद्यार्थियों की ज़रूरत और उनके स्तर को ध्यान में रखते हुए सार्थक प्रिंट का प्रदर्शन व इस्तेमाल करें।

इस लेख में हम प्रिंट का कक्षा में दिन-प्रतिदिन इस्तेमाल और उसके इस्तेमाल से जुड़ी कुछ गतिविधियों के बारे में जानेंगे।



कक्षा में चीजों को और जगहों को अंकित (label) करना

कक्षा में विभिन्न चीजों पर उनके नाम लिखकर लगाना प्रिंट की समझ को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी है। आप इन जगहों पर लेबल लगा सकते हैं:

1. बोर्ड, मार्कर, दीवार, दरवाज़ा आदि चीजों का नाम लिखकर उन पर लगाना
2. कक्षा में रखे विभिन्न सामानों जैसे कि स्टेशनरी के डिब्बों, TLM व खिलौनों आदि पर उनका नाम लिखकर लगाना
3. कक्षा में अलग-अलग कोनों के नाम लगाना जैसे पठन कोना, लेखन कोना, आदि।

हम यह लेबल बच्चों के साथ बनाकर उन्हीं की मदद से कक्षा में लगा सकते हैं। इससे बच्चों का ध्यान उन लेबल पर जाता है और वह कक्षा में चीज़ें इस्तेमाल करने के लिए जब उन्हें ढूँढ़ते हैं या फिर इस्तेमाल करने के बाद उन्हें वापस रखते हैं तो वह उन लेबल का इस्तेमाल ज़रूर करते हैं।

आप यह लेबल बच्चों के घर की भाषा व स्कूल की भाषा, दोनों में लगा सकते हैं।



कक्षा के नियम

हर कक्षा के कुछ नियम होते हैं। शिक्षक यह नियम बच्चों के साथ बनाकर उन्हें कक्षा में लगा सकते हैं। इसके लिए वह मूलपाठ (text) के साथ चित्रों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। रोज़ाना 2 मिनट देकर इन पर ध्यान ले जाना बच्चों को नियमों का पालन करने, याद रखने एवं पढ़ना सीखने में भी मदद करता है।



बच्चों के जन्मदिन

शिक्षक बच्चों के जन्मदिन उनके नाम के साथ कक्षा में एक चार्ट पर लगा सकते हैं। इससे बच्चे एक दूसरे के जन्मदिन मानने के लिए उत्सुकता के साथ-साथ महीनों के नाम व अपने दोस्तों के नाम पढ़ना व लिखना सीख सकते हैं। इस चार्ट पर लिखे बच्चों के नाम व महीनों के नाम पर विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करने के लिए शिक्षक कई तरह के खेल खेल सकते हैं, जैसे-

- शिक्षक बच्चों को पहेली के रूप में महीनों के बारे में पूछ सकते हैं, उदहारण- कक्षा में ऐसे दो महीनों के नाम ढूँढ़ो जिनमें हमारी दो महीने की छुट्टियाँ पड़ती हैं और हम खूब आम और तरबूज खाते हैं।

- इस चार्ट में उन दोस्तों के नाम ढूँढ़ो जो आज कक्षा में उपस्थित नहीं हैं।
- शिक्षक महीनों के नाम व बच्चों के नाम के पठन कार्ड बना कर रख सकते हैं और बच्चों को कोई कार्ड देकर उस नाम से चार्ट पर लिखे नाम से मिलाने को कह सकते हैं।

શાબ દીવાર

कक्षा में या बच्चों के जीवन में बार-बार इस्तेमाल किए जा शब्दों को जब हम किसी बोर्ड, चार्ट या दीवार पर लगाते हैं तो उसे शब्द दीवार कहते हैं। इस तरह के शब्दों को प्रदर्शित करने से या बच्चों के साथ लिखने और उन्हें चार्ट पर लगाने से बच्चों की वर्तनी में काफी विकास होता है। इसमें हम बहुत तरह के शब्द ले सकते हैं, जैसे कि -



- बच्चों के परिवेश, उनके रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े शब्द
 - किसी मौखिक चर्चा, कहानी, पाठ आदि में आए मुख्य शब्द

इसके लिए इन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है:

- छोटे बच्चों के लिए शब्द-दीवार बनाते समय हम चित्रों का भी सहारा ले सकते हैं और शब्दों के साथ उनके चित्र लगा सकते हैं।
 - साथ ही, बच्चों के घर की भाषा के शब्दों को शामिल करना भी उपयोगी है।
 - कक्षा की विभिन्न गतिविधियों के दौरान इन पर ध्यान ले जाना व इस्तेमाल करना ज़रूरी है जैसे कि कुछ खास शब्द ढूँढ़ना या किसी खास वर्ण से जुड़े शब्द ढूँढ़ना, किसी शब्द को लिखने के लिए इससे मदद लेना।
 - शब्द-दीवार में लिखे गए शब्दों को समय-समय पर बदलना भी ज़रूरी है जिससे कि यह कक्षा में उस समय किए जा रहे पाठ से जुड़ी हो व बच्चे नई शब्दावली से भी परिचित होते रहें।



प्रिंट जो बच्चों की प्रतिक्रिया माँगता है

हमें अपनी कक्षा में रोज़ाना उस तरह के प्रिंट का भी इस्तेमाल करना चाहिए जिसमें बच्चों की भी प्रतिक्रिया हो। जैसे-

- बच्चों से पूछ कर रोज़ाना दिनाँक, दिन, मौसम आदि बोर्ड पर लिखना। यहां पर बच्चों का ध्यान कई चीज़ों पर ले जा सकते हैं, जैसे – किसी खास ध्वनि पर, किस शब्द की वर्तनी पर, पूर्ण विराम, आदि।

- कक्षा में मासिक कैलेंडर लगाना व रोज़ सुबह उस दिन की तिथि व दिन पर निशान लगाना। आप उस दिन के मौसम आदि पर भी बात कर सकते हैं। बच्चों से कुछ घटनाओं से जुड़े प्रश्न किए जा सकते हैं, जैसे कि 10 तारीख कौन से दिन की है, माता-पिता किस दिन स्कूल आने वाले हैं, आदि। कैलेण्डर के पास ही वर्ष के महीनों के, अथवा सप्ताह के दिनों के नामों को शब्द-दीवार में लगाया जा सकता है।
 - कक्षा की दैनिक समय सरिणी या उस दिन किए जाने वाली गतिविधियों पर बच्चों के साथ चर्चा करके उसे बोर्ड पर लिखना। और जो काम हो जाए उस पर बच्चों से पूछ कर टिक लगाना या बच्चों को ही बारी-बारी से टिक लगाने का मौका देना।

कहानी व कविताएं कक्षा में प्रदर्शित करना

- शिक्षक कक्षा में कहानियों के चित्र लगा सकते हैं और बच्चों को बारी-बारी से चित्र देख कर कहानी सुनाने या लिखने के लिए दे सकते हैं। इस से जुड़ी कुछ गतिविधियां रोलप्ले के रूप में भी कराई जा सकती हैं।
- कुछ छोटी कहानियों को चार्ट पर लिख कर भी लगा सकते हैं और वहीं से पढ़ कर सुना सकते हैं। आप कुछ खास शब्दों पर ध्यान भी ले जा सकते हैं।

- इसी तरह बच्चों के साथ बोली जाने वाली उनकी पसंद की कविताओं को चार्ट पर लिख कर लगाना और गाते समय उन पर बच्चों का ध्यान ले जाना भी एक गतिविधि है जिससे बच्चे पढ़ना व लिखना सीखते हैं।
- इन सभी गतिविधियों को प्रयोग में लाने के लिए ज़रूरी है कि शिक्षक अपनी कक्षा में ऐसा माहौल बनाएं जिससे बच्चे उन सब कार्यों में रुचि दिखाएँ और ज़्यादा से ज़्यादा भाग लें।



बनाया है या दूसरे के काम में क्या बात अच्छी लगी। इससे बच्चों में आत्मविश्वास के साथ-साथ सामाजिक-भावनात्मक व रचनात्मक कौशलों का भी विकास होता है।

बच्चोंके कार्योंको कक्षा में प्रदर्शित करना और आपस में उन पर चर्चा करना।

बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में खुद को व्यक्त करने के मौके दें जिसमें बच्चे चित्रों, शब्दों या वाक्यों के माध्यम से अपनी बात रख सकते हैं। आप बच्चों का काम कक्षा में लगा सकते हैं व बच्चों को समय दे सकते हैं जब बच्चे एक-दूसरे के काम को देखें व आपस में बात करें। जैसे कि, अपने साथी को बताना कि मैंने क्या



उपस्थिति चार्ट

बच्चे सबसे पहले अपना लिखा हुआ नाम पहचानना सीखते हैं। इसके लिए उनके नाम का चार्ट कक्षा में लगाएँ और उन्हें अपना और अपने साथियों का नाम पहचानने के लिए प्रेरित करें।

एक बार बच्चे अपना नाम पहचानने लग जाएँ, तो उसी को उनका उपस्थिति चार्ट बना कर उपयोग कर सकते हैं। बच्चों से हर रोज अपने नाम के आगे कुछ चित्र बनाने या निशान लगाने या हस्ताक्षर करने के लिए कहा जा सकता है।

साथ ही, इस पर बात भी की जा सकती है कि कौन से साथी स्कूल नहीं आएँ हैं, क्यों नहीं आएँ हैं, आदि।

कहानी की समीक्षा

बच्चे जो भी कहानी कक्षा में पढ़ते या सुनते हैं शिक्षक उनसे पूछ सकते हैं कि उन्हें वह कहानी कैसी लगी, कहानी में सबसे अच्छा हिस्सा कौन सा था या सबसे अच्छा पात्र कौन सा लगा।

इसके लिए शिक्षक प्रिंट से जुड़ी निम्नलिखित गतिविधियां अपना सकते हैं:



- **Role on the wall:** इसमें शिक्षक दीवार पर कहानी में आए कोई भी एक पात्र का चित्र लगा कर बच्चों को बारी-बारी से बुला कर लिखवा सकते हैं कि वह चरित्र कैसा था। इसके लिए पहले से बने विशेषण शब्दों के कार्ड का इस्तेमाल भी किया जा सकता है जिसमें से बच्चे चुनकर कार्ड लगा सकते हैं या फिर खुद से लिख भी सकते हैं। यह कक्षा 2 या 3 के बच्चों के साथ किया जा सकता है।
- बच्चे कहानियों को रेटिंग भी दे सकते हैं। वह चार्ट पर लिखे कहानियों के नाम के आगे या तो अंकों के माध्यम से या फिर सितारों के माध्यम से रेटिंग दे सकते हैं।

मज़ेदार अनुभव



बच्चों को अपने विचार अभिव्यक्त करने के मौके देने के लिए ये प्रक्रियाएँ अपनाई जा सकती हैं:

- शिक्षक अपनी कक्षा में एक मज़ेदार अनुभव का कोना बना सकते हैं जिसमें बारी-बारी से प्रतिदिन बच्चे अपने किसी अनुभव के बारे में लिखें या चित्र बनाएँ और बाकी बच्चे उसे पढ़े व कुछ समय के लिए उस पर चर्चा करें।

- हर रोज किसी एक बच्चे से उसके 'आज की सोच या अनुभव के बारे में कुछ लिखने के लिए कहें। जैसे - आज स्कूल आते हुए मैंने दो बिल्लियों की लड़ाई देखी, या आज मुझे बहुत ठंड लग रही है आदि। बाकी के बच्चों को उसे पढ़ने के लिए कहें और आप उस पर 2-3 मिनट चर्चा करें।
- यदि बच्चे लिखना नहीं जानते तो शिक्षक स्वयं भी ब्लैकबोर्ड के कोने में एक संदेश लिख सकती हैं। यह संदेश बच्चों द्वारा बताया गया हो सकता है या उनसे जुड़ा हो सकता है जैसे कि आज मीरा का जन्मदिन है या आज श्याम बाजार जाएगा।

ध्यान रखें, यह जगह बच्चों को कोई नैतिक ज्ञान देने के लिए नहीं है, जैसे - झूठ बोलना पाप है।

यूं तो कई प्रकार की गतिविधियाँ कक्षा को प्रिंट समृद्ध बनाने के लिए सोची जा सकती हैं परंतु यह बात ध्यान में रखना ज़रूरी है कि प्रिंट को कक्षा में केवल प्रदर्शित करना ही काफी नहीं होता, उसका कक्षा में इस्तेमाल करना भी ज़रूरी होता है और बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रख कर समय-समय पर बदलना भी ज़रूरी होता है। शिक्षकों को बस यही समझना ज़रूरी है कि कक्षा को सजाने में और उसे प्रिंट समृद्ध बनाने में फर्क होता है, प्रिंट का इस्तेमाल शिक्षक के निर्देशों में होना चाहिए और प्रिंट बच्चों की पहुँच में होना चाहिए।